गर्मी की छुट्टियाँ

अरुण कमल

गर्मी की छुट्टियों का इन्तज़ार गर्मी पड़ते ही शुरू हो जाता था। पहले तो सुबह की कक्षाएँ लगतीं। फिर लगता अब छुट्टी आने वाली हैं। मुझे एक बार की याद है जब गर्मी की छुट्टियों में नानी के गाँव गया था। पूरा महीना वहीं बीता। माँ और बहनों के साथ। ममेरे भाई बहन तो थे ही। मौसरे भाई-बहन भी छुट्टियों में आ गए थे। खूब मज़ा आया। हम बाहर खुले में सोते। तारे गिनते। चाँद चलता। बादल चलते। इतना चमचम चाँद फिर कभी न दिखा। इतना घना अँधेरा। झाड़ियों में जुगनू। कभी हवा चुप, कभी तेज़। कभी हल्की पतली-सी हवा। कभी चादर ओस से भीग जाती। सवेरे जल्दी नींद खुलती। हम मैदानों की तरफ भागते - अपने गमछे-तौलिए लिए। उधर से रेहट पर नहाकर आते। ढेर सारा ठण्डा पानी देह पर पड़ता।

दोपहर में आम के बगीचे हमारा घर होते। हम खूब आम खाते। कच्चे आम को नमक के साथ एक पोटली में घुमाकर। अधपके आमों को चावल की कोठी में गोरकर-दबाकर। तब मज़ा आता जब इसका आम वो उड़ा ले जाता या उसका मैं। खूब धौल-धमाका होता। ऐसी चोरियों का मज़ा ही कुछ और होता। आम का गुड़ामा हम रोटियों के साथ खाते। गुड़ में पकाए आम बहुत स्वादिष्ट होते हैं। कभी-कभी बड़ों की ज़िद पर हम दोपहर बाद सो भी जाते। खपरैल के छप्पर के नीचे मिट्टी के घर में चटाई पर सोना कितना अच्छा लगता - एकदम सन्नाटा। हल्का अँधेरा। किसी छेद से आती धूप की किरणें, धूल भरी, गोल-गोल। बाहर लू चलती। भीतर ठण्डा रहता।

वहाँ काँटे भी बहुत थे। पीले फूलों वाले काँटे। गड़ने पर खून बहता। कोई बहन तुरन्त काँटा निकालती। हम थोड़ी दूर लँगड़ाते। फिर सब कुछ पहले जैसा हो जाता। तब न तो टेलीविज़न था, न गाँव में अखबार। न ही रेडियो था नानी के घर। बिजली भी न थी। सूरज डूबते ही रोशनी धीरे-धीरे कम होने लगती। पक्षी पुकारते-बोलते पेड़ों पर लौटते। घरों से धुआँ उठता। खेतों पर धुएँ की तह जम जाती। सड़क सुनसान। गाएँ रम्भातीं। बछड़े पगहा (उन्हें बाँधने की रस्सी) खींचते। बालटी में दूध की पहली धार की आवाज़ आती। बगल के घर में कुछ सयाने बच्चे लालटेन बीच में रख पढ़ने बैठ जाते। हम उन्हें दूर से देखते। हम तो घूमने आए थे। किताबें छोड़कर। यहाँ न तो कोई हमें पढ़ने को कहता। न डाँटता। न मारता। बस चारों तरफ हँसी-खुशी थी। भाग-दौड़। खाना-पीना-खेलना। गर्मी की छुट्टी पके आम की तरह थी। खूब रस से भरी हुई। चकमक

माथापच्ची के हल

1. पहली लड़की की ऊँचाई 70 इंच, दूसरी की 72, तीसरी की 74 और चौथी लड़की की 80 इंच है।

2. 9 वें दिन बर्तन पूरा भर जाएगा। चूँकि हर दिन बैक्टीरिया की संख्या दुगुनी हो जाती है और 10 वें दिन बर्तन पूरा भरता है इसका मतलब 9 वें दिन आधा भर जाएगा।

5. 27 क्योंकि 2 + 7 = 9 और 9 * 3 = 27

8. केवल 0, 1, 6, 8, 9 ही ऐसे अंक हैं जिन्हें उल्टा लिखने पर भी पढ़ा जा सकता है। उलटने पर 0, 1, 8 तो 0, 1, 8 ही रहते हैं पर 6 का अंक 9 हो जाता है। सम्भावित बस नम्बर 9, 16, 81, 100, 169 और 196 में से ही हो सकता है। सही जवाब 196 ही होगा क्योंकि इसे उलटने पर 961 बनता है।